भजन

तर्ज– ओ मेरी जोहरा जबीं

ये रतनपुरी वाला,इसका हर काम आला
है ये सबसे महान,हुआ कुर्बान,
अपने साथ पर कुर्बान

1–इधर उधर भटक रहे साथ को जगा दिया
सुना के वाणी धाम की गले उन्हे लगा लिया
वो.सदा,वो सदा साथ पे रहते है मेहरबान

2–नगर नगर,शहर शहर लगे शिविर थके नही
है दर्द साथ का उन्हे, बढ़े चलें रूके नही
ना रोके, ना रोके रास्ता उनका कांपें दज्जाल

3–है ये जागनी रत्न कर रहे जागनी
था डूबा सूर्य धर्म का ,उदय हुआ अब यहीं
ना छुपे,ना छुपे अब तो सच्चाई हो जाए बयान

4–ना होगें अब कभी जुदा,ये साथ भी हुआ फिदा
कि पंजे वाला मिल गया, आ के देखो जरा
है मिले,है मिले प्राणो के नाथ हमे आज यहां